Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 01 January - 2024

DOIs:10.2018/SS/202401013 --:-- Research Paper / Article / Review

मोहन राकेश के उपन्यासों में व्यक्त समस्याएँ

अनुराधा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
Email - jaysriseet14@gmail.com

सारांश :- मोहन राकेश जी आधुनिक युग के प्रसिद्ध उपन्यासकार माने जाते हैं। इन्होंने कम उपन्यास लिखे हैं, परंतु प्रसिद्ध इन्हें उपन्यासों से मिली अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, अंतराल उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। मोहन राकेश के उपन्यासों में व्यक्त समस्याएं सामाजिक आर्थिक राजनीतिक पारिवारिक आधुनिक रूप में व्यक्त किया गया है। वर्तमान भारतीय समाज का पश्चिमी आधुनिकतावाद और वंशानुगत संस्कारवाद से जुड़ी सभी समस्याओं को उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अँधेरे बंद कमरे उपन्यास में हरबंस और नीलिमा के माध्यम से पारस्परिक ईमानदारी भावात्मक लगाओ और मानसिक समृद्धि से रिक्त दांपत्य जीवन का यही प्रभावशाली चित्रण हुआ है। न आने वाला कल उपन्यास से भी आधुनिक जीवन से जुड़ी समस्याओं को विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया है। जो मनोज और शोभा तथा अन्य पात्रों के माध्यम से दिखाया गया है। अंतराल उपन्यास में मोहन राकेश ने आधुनिक रूप से जुड़ी सभी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है इस प्रयास में मोहन राकेश सफल हुए हैं।

मुल्य शब्द:- पृष्ठभूमि, संस्कारवाद, अभिव्यत्त, महत्वकाक्षाँए, पश्चिमी, अनतिकता ।

मोहन राकेश आधुनिक युग के महान साहित्यकार माने जाते हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में आधुनिक समस्याओं को बहुत ही सुंदर प्रस्तुत किया है। उनकी उपन्यासों में आधुनिक तथा पारंपरिक दोनों की प्रमुख विशेषता रही है। स्त्री पुरुष के संबंधों और उनके बीच मानसिक संघर्षों का चित्रण अत्यंत व्यवहारिक और सामाजिकता के साथ हुआ है।

मोहन राकेश के उपन्यासों में समस्याएं कुछ इस प्रकार हैं :-

आधुनिक जीवन की समस्याएं

मोहन राकेश के उपन्यासों में आधुनिक जीवन से जुड़ी समस्याओं में सामाजिक आर्थिक राजनीतिक पारिवारिक परंपरावादी सभी पहलुओं को आधुनिक युग में देखा गया है। मोहन राकेश जी ने अँधेरे बंद कमरे की पृष्ठभूमि में छपी आधुनिक जीवन की समस्याओं को दुनिया के सामने लाने का कत्थक प्रयास किया है। दिल्ली का जीवन जहां भीड़भाड़ प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से अपरिचित सा दौर चला जाता है। पुण्याराम रोहन राकेश की उपन्यास में दिल्ली की वर्तमान जीवन को जोड़ कर सभी उपन्यासों को लोगों के समझ लाने का कत्थक प्रयास किया है। अँधेरे बंद कमरे में मोहन राकेश ने वर्तमान भारतीय समाज का अभिजात नगर मांडो हिस्सों में विभाजित है। पश्चिमी आधुनिकतावाद और दूसरे में वंशानुगत संस्कारवाद। हरबंस और नीलिमा इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। अपनी पहचान के लिए भारतीय अभिजात वर्ग की

भौतिक वेश वीक और संस्कृत महत्वाकांक्षाओं के अँधेरे बंद कमरे को खोलने वाला यह उपन्यास वर्तमान एवं आधुनिक जीवन की समस्याओं को दर्शाता है।

वैसे देखा जाए तो हरबंस अपने आप को आधुनिक विचार वाला इंसान समझता है। आधुनिक के नाम पर आए दिन पार्टी करता शराब पीता घर लेट से आता कहने को तो स्त्री-पुरुष को एक समान दर्जा देने की बात करता है। परंतु जब नीलिमा आधुनिक एवं स्वतंत्र ख्यालों वाली महिला है। जब देर तक पार्टी करती है और पार्टी में शराब का सेवन करती है तो उससे कहता है आज के बाद में तुम्हें देखना नहीं चाहता हूं। इस प्रकार वह अपने को एक और आधुनिक विचार वाला बतलाता है, लेकिन जब नीलिमा पार्टी करती है तब वह सहन नहीं कर पाता है। इस प्रकार देखा जाए तो वह सिर्फ अपनी सोच में आधुनिकतावाद को लिए रहता है। उसको खुद अमल नहीं कर पाता है। सिर्फ आधुनिकता के नाम पर आर्थिक भोग विलाश की वस्तुओं को महत्व देना एक प्रकार से इसके नजरों में आधुनिक माना है।

मोहन राकेश के उपन्यास अँधेरे बंद कमरे उपन्यास से स्त्री पुरुष संबंध को विविध पहलू मानसिक रूप से प्रभाव आधुनिक तथा परंपरागत संस्कृति के बीच का प्रभाव एवं स्त्री पुरुष के बीच संघर्षों की तुलना का प्रभाव आधुनिकता के नाम पर दिखता है। अँधेरे बंद कमरे उपन्यास में आधुनिक समस्याओं को चित्रित करता है। युवक युक्ति के चित्रों में अनेक झलकियां देखने को मिलती है। शहरीकरण के नाम पर आर्थिक भोग विलास की वस्तुओं को ज्यादा महत्व दिया गया है और दूसरी तरफ भावनाओं का हनन होते दिखाया गया है।

न आने वाला कल उपन्यास में आधुनिक युग में तेजी से बदलते जीवन तथा व्यापक व्यतीत और न आने वाला कल की महत्वाकांक्षा को लेकर यह उपन्यास आर्थिक संघर्ष स्त्री पुरुष संबंध को उजागर करने का प्रयास किया है। न आने वाला कल आधुनिकता के नाम पर आर्थिक रूप से अपने आप मजबूत करना जहां एक दूसरे की भौतिक भावना को नजर अंदाज करना ही एक दूसरे का अभिशाप बन गया है। समाज में फैली आधुनिकता को अभिव्यक्त करता है। आधुनिकता के नाम पर फैली अनैतिकता को मनोज शोभा मिस्टर व्हिसलर चोपल पादरी इत्यादि। पन्नों के माध्यम से विभिन्न आधुनिक युग की समस्याओं का चित्रण किया गया है। आधुनिकता के नाम पर स्त्री पुरुष के संबंधों में आने वाली आर्थिक समस्याओं को दर्शाया गया है। न आने वाला कल उपन्यास में मनोज के माध्यम से दिखाया गया किस प्रकार से अपनी नौकरी से तंग आ जाता है। एक स्कूल में किस प्रकार शिक्षक के साथ व्यवहार शोषण किया जाता है। वह अपनी महत्वाकांक्षा से अधिक कुछ भी नहीं कर पाता। वह अपनी शादी से भी खुश नहीं रहता है। अंत में वह नौकरी से खुश हो पाता है और ना ही शादी से पूर्ण मिलन वह दोनों से तंग आकर नौकरी और पत्नी को छोड़ने के लिए फैसला करता है। सबसे पहले वह त्यागपत्र देने के लिए अपने आप को तैयार करता है।

अंतराल मोहन राकेश के उपन्यास में एक है। वर्तमान युग की मानसिक स्थिति को उजागर करती है। इसमें प्रमुख पात्र श्याम और कुमार है। पुनामी राम जिनके माध्यम से आधुनिक युग की आर्थिक सामाजिक राजनीतिक सभी प्रकार की समस्याओं को इंगित करती है। अंतराल उपन्यास में आधुनिक जीवन से जुड़ी समस्याओं को प्रमुख बिंदु नहीं माना है परंतु तेजी से बदलती जीवन को प्रस्तुत करने की प्रयास किया है। अंतराल आज की भाषा में लिखी गई मानव संबंधों की एक आंतरिक कहानी है।

पारिवारिक जीवन की समस्याएं :

मोहन राकेश के उपन्यास में इसी प्रकार की समस्याएं मौजूद हैं। परंतु सबसे अधिक प्रयास दिखता है अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, अंतराल इनकी प्रमुख उपन्यास है। जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, आधुनिक, परंपरागत एवं पारिवारिक समस्या आदि का बढ़-चढ़कर देखने को मिलती है। अँधेरे बंद कमरे उपन्यास में पारिवारिक समस्या

सबसे अधिक प्रभावित करती है। उपन्यास के प्रमुख केंद्रित पत्र हरबंस और नीलिमा होते हैं। जो पारिवारिक दंपति जीवन से इतनी तंग आ चुके होते हैं कि एक परिवार या हम कह सकते हैं कि एक घर में रहने के बाद भी दोनों का एक दूसरे के प्रति व्यवहार अजनबियों जैसा रहता है। यहां तक की एक बिस्तर में होने के बाद भी दोनों एक दूसरे से बात नहीं करते हैं। जहां एक और हरबंस अपने आप को आधुनिक विचार वाला समझता है। परंतु जब नीलिमा पार्टी और शराब का सेवन तथा देर रात घर पर आना उसे तनिक भी नहीं भाता है। दिल्ली जैसे शहरों का जीवन शैली को उजागर करती है पारिवारिक जीवन के खोखलेपन की चित्रण करता है। नीलिमा और मधुसूदन के पारिवारिक जीवन में आने वाली समस्याओं को दर्शाया गया है ।नीलिमा और मधुसूदन आधुनिक पति-पत्नी के आंतरिक क्षेत्र को भी ठीक से पता कर पाना कठिन होता है। आधुनिक पारिवारिक संबंधों के बनते एवं नए संबंधों को खोजने का प्रयास किया गया है। आधुनिक जीवन संघर्षों का सजा के अंकन किया गया है। एक हिंदी का अध्यापक जो पहली पत्नी के पश्चात दूसरी विवाह करता है।

ना आने वाला कल मोहन राकेश के उपन्यास हैं जो आधुनिक पारिवारिक जीवन शैली को इंगित करती है। इस उपन्यास में स्कूल के वातावरण के साथ-साथ पारिवारिक समस्याओं को भी उजागर करने का प्रयास किया है इसके प्रमुख पात्र मनोज तथा शोभा को माना जा सकता है और भी पात्र हैं। जिनकी भूमिका भी उतनी ही है पति-पत्नी का टकराव अलगाव को लेकर आने वाली पारिवारिक समस्याओं को जगन पन कठिन होता है फिर भी राकेश जी ने कथक प्रयास किया है कि इन सभी समस्याओं को दर्शाने का जहां एक और हिंदी का शिक्षक अपनी विचार रखने में समझने में नाके पत्र हो जाता है। इधर सभी पात्रों से भी पता नहीं है कि उनके जीवन का फल क्या है

संदर्भ : आधार ग्रंथ सूची:

1. मोहन राकेश ; 'अँधेरे बंद कमरे' राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली एवं दिल्ली, 1961, पृष्ठ संख्या 145 – 146, 208, 200.
2. मोहन राकेश ; 'ना आने वाला कल' - राजपाल और सनस कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण – 1994.
3. मोहन राकेश; 'अंतराल', राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1974, पृष्ठ संख्या 81 – 82.
4. सारिका : मार्च 1973, पृष्ठ संख्या – 60-62
5. मोहन राकेश : आषाढ़ का एक दिन
6. अर्जुन के0 तड़वी : मोहन राकेश के साहित्यिक का सामाजिक चित्रण
7. सफीउल्लाह अंसारी : मोहन राकेश के उपन्यास शिल्प
8. डॉ0 जयदेव तनेजा : मोहन राकेश, राकेश रंग-शिल्प और प्रर्दशन